जलियांवाला बाग हत्याकांड : एक प्रश्न

लेखक-नवतेज सरना (पूर्व उच्चायुक्त,यू.के. और जलियांवाला बाग शताब्दी स्मारक समिति के सदस्य)

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र-I (इतिहास)

द हिन्दू

12 अप्रैल, 2019

"जलियांवाला बाग नरसंहार के लिए ब्रिटेन द्वारा सीधे तौर पर माफी माँगने से इंकार करना अपेक्षित था, मगर ये निराशाजनक है।"

भयावह जलियांवाला बाग हत्याकांड की शताब्दी के अवसर पर ब्रिटेन द्वारा माफी मांगने की अपेक्षा की गयी थी, ऐसा इसलिए क्योंकि इस बार यह मांग केवल भारतीयों द्वारा ही नहीं की गयी थी, बल्कि राजनीतिक दलों में ब्रिटिश सांसदों के एक मजबूत दल द्वारा भी इसकी मांग की गयी थी। लेकिन अंत में ब्रिटिश प्रधानमंत्री थेरेसा ने सिर्फ इतना कहा कि 'जो कुछ भी हुआ इसका हमें गहरा अफसोस और दुख है' ("We deeply regret what happened and the suffering caused)

ब्रिटिश प्रधानमंत्री द्वारा कहे गये शब्द महत्वपूर्ण हैं, विशेष रूप से भारी-भरकम अंग्रेजी भाषा में और जिन्होंने इस भाषा का आविष्कार किया है, वे निश्चित रूप से जानते हैं कि इसका उपयोग कैसे करना है। कोई भी व्हाइटहॉल में किसी मसौदे को सावधानी से तैयार करने की कल्पना कर सकता है जिसके बाद प्रधानमंत्री का बयान तैयार होता है।

अगर हम तुलना करें, तो अगले दिन ब्रुशेल्स में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में सुश्री थेरेसा मे ने कहा कि वे अब तक ब्रेक्जिट सौदे में अपनी विफलता को 'ईमानदारी से स्वीकार करती हैं और उन्हें इसका पछतावा है, She"sincerely regretted" her failure in delivering a Brexit deal so far-'यहाँ 'गहराई से या गहरा या deeply शब्द' ईमानदारी से या sincerely' शब्द से 'मजबूत' है, लेकिन व्यक्त की जाने वाली प्रकृति समान है। इस कथन का दूसरा पहलू इसकी निष्क्रियता है- अर्थात 'क्या हुआ या जो कुछ भी हुआ या what happened', 'दुख का कारण या suffering caused' यहाँ किसी एजेंसी या संस्था का कोई जिक्र नहीं किया गया है। यह किसी भी पर्यवेक्षक का कथन हो सकता है लेकिन यह उन पूर्वजों का नहीं हो सकता जिन्होंने अत्याचार किया हो। इस तरह की प्रवृत्ति विचलित करने वाली है: किसी ने भी पीड़ितों या उनके वंशजों के लिए कोई सहानुभूति नहीं दिखाई।

इस आलेख में हम उस पर थोडा प्रकाश डालेंगे कि "क्या हुआ था"। 13 अप्रैल, 1919 को, बैसाखी के दिन, रॉलेट एक्ट, ब्रिगेडियर जनरल (अस्थायी रैंक) के खिलाफ विरोध प्रदर्शन के दौरान अमृतसर में अशांति के बाद, रेजिनाल्ड डायर ने एक संलग्न मैदान, जलियांवाला बाग में 50 राइफल्स और 40 खुखरी वाले गोरखाओं की स्ट्राइक फोर्स तैनात की, जहाँ 15,000-20,000 लोग शांतिपूर्ण ढंग से एक जनसभा आयोजित कर रहे थे। अचानक से और बिना किसी चेतावनी के, डायर ने भीड़ पर गोलियां चलाने का आदेश दे दिया था।

वस्तुत: पॉइंटब्लैंक रेंज में शक्तिशाली राइफलों का उपयोग करते हुए 1,650 राउंड की फायरिंग जानबूझकर और लक्षित की गई थी। जिसके कारण कई सौ लोग मारे गये और कई घायल हुए। आधिकारिक तौर पर यह स्वीकारा गया कि इस घटना के बाद 379 लोगों की मृत्यु हुई है, जो कम थी। सेवा समिति और प्रत्यक्षदर्शी के जानकारी के अनुसार, इनकी संख्या बहुत अधिक थी। गैर-भारतीय लेखक भी मारे गये लोगों की संख्या 500 से 600 के बीच बताते हैं।

नरसंहार के दो दिन बाद, पंजाब में मार्शल लॉ की उद्घोषणा के बाद और भी कई ऐसी घटनाएं हुईं, जिसका पालन करना था, जैसे-किसी को भी घसीट कर ले जाना, सलाम आदेश, सार्वजनिक बंदोबस्त, मनमाने ढंग से गिरफ्तारी, हवाई जहाज द्वारा नागरिकों को ऊपर से नीचे फेंक देना और सबसे बड़ी बात इन सभी को सख्ती से लागू किया गया था।

टाल-मटोल करने का इतिहास

आईए आगे देखते है कि इसके बाद क्या किया गया। ब्रिटेन में उदारवादियों द्वारा जांच के लिए बुलाने के बाद, अर्थात डिसॉर्डर इन्क्वाइरी कमेटी, जिसे जल्द ही अपने अध्यक्ष लॉर्ड हंटर के नाम से जाना गया, की स्थापना की गई थी। अपने बयान में

डायर ने कहा कि उसका इरादा भीड़ को दंडित करना था, 'व्यापक प्रभाव' बनाना था और न केवल अमृतसर में, बल्कि पूरे पंजाब में आतंक पर प्रहार करना था। समिति नस्ल के आधार पर विभाजित हुई तथा बहुसंख्यक अल्पसंख्यक रिपोर्ट प्रस्तुत की। हंटर कमेटी की बहुसंख्यक रिपोर्ट ने, चयनात्मक आलोचना का उपयोग करते हुए, डायर की दोषिता स्थापित की, लेकिन लेफ्टिनेंट गवर्नर माइकल ओ डायर को छोड़ दिया।

तीन भारतीय सदस्यों द्वारा लिखी गई अल्पसंख्यक रिपोर्ट इसकी आलोचना में अधिक तीखी थी। तब तक डायर ब्रिटिश के लिए बोझ बन चुका था और उसे अपनी कमान त्यागने के लिए कहा गया, जिसके बाद वह इंग्लैंड चला गया। डायर को हटाने का आदेश ब्रिटिश विदेश मंत्री, एडविन मोंटेग्यू द्वारा अनुमोदित किया गया था और एक तीखी बहस के बाद, हाउस ऑफ कॉमन्स द्व ारा भी इसे अनुमोदित कर दिया गया। रूढ़िवादी लॉर्ड्स ने एक अलग समझौता किया और अधिकारी के साथ अन्याय होने के लिए सरकार को फटकार लगाई। डायर के पक्ष में इसी तरह की भावनाएं दक्षिणपंथी प्रेस से आईं - मॉर्निंग पोस्ट ने उनके लिए एक फंड शुरू किया जिसमें 26,000 पाउंड एकत्र हो गये थे। रुडयार्ड किपलिंग, जिन्होंने निधि में 10 पाउंड का योगदान दिया था, ने 1927 में डायर के अंतिम संस्कार के लिए भेजे गए पुष्पांजलि पर एक टिप्पणी की: 'उन्होंने अपना कर्तव्य निभाया।'

1920 में हाउस ऑफ कॉमन्स में जिस दिन भाषण हुआ, वह दिन विंस्टन चर्चिल का था, जो गाँधी और उनके सत्याग्रह का तो प्रशंसक नहीं था लेकिन उन्होंने डायर के कार्य को 'एक असाधारण घटना, एक गलत घटना और एक ऐसी घटना कहा जो मनहूस भयावह थी।'

डायर निश्चित रूप से दुष्ट था, लेकिन वह अकेला नहीं था। वह कई ऐसे लोगों में से एक था अर्थात्, जॉन निकोलसन, फ्रेडरिक कूपर, जे.एल कोवान, जिन्होंने 1857 में गंभीर रूप से हिंसात्मक कार्यवाही का सहारा लिया और 1872 के बाद कूका विद्रोह किया; वे ओ डायर (बाद में 1940 में ऊधम सिंह की हत्या) के नेतृत्व में निरंकुश प्रशासन का भी हिस्सा थे। 2013 में, तत्कालीन प्रधानमंत्री डेविड कैमरन ने भी चर्चिल के समान ही इस घटना को 'भयावह' उद्धृत किया और कहा कि 'ब्रिटिश इतिहास में एक बहुत ही शर्मनाक घटना थी' और 'हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि यहाँ क्या हुआ था।'

GS World टीम...

जलियांवला बाग हत्याकांड

चर्चा में क्यों?

- 13 अप्रैल, 2019 को जलियांवाला बाग हत्याकांड के 100 वर्ष पूरे हो जाएंगे।
- ब्रिटेन की पीएम थेरेसा मे ने वहाँ की संसद में जलियांवाला बाग हत्याकांड के लिए खेद जताया है। थेरेसा मे ने कहा है कि, जो हुआ उसके लिए हमें गहरा अफसोस है।
- हालांकि, ब्रिटेन के विदेश मंत्री ने कहा कि अगर हम तमाम घटनाओं पर माफी मांगने लगेंगे तो इससे माफी का महत्व कम हो जाएगा।

पृष्ठभूमि:-

- 13 अप्रैल, 1919 को यहाँ एकत्रित भीड़ दो राष्ट्रीय नेताओं -सत्यपाल और डॉ.सैफुद्दीन किचलू की गिरफ्तारी का विरोध कर रही थी।
- अचानक ब्रिटिश सैन्य अधिकारी जनरल डायर ने अपनी सेना को निहत्थी भीड़ पर, तितर-बितर होने का मौका दिए बगैर, गोली चलाने के आदेश दे दिए और 10 मिनट तक या तब तक गोलियां चलती रहीं जब तक वे खत्म नहीं हो गयीं।
- यह जनसभा जलियाँवाला बाग में हो रही थी, इसलिए इसे जलियाँवाला बाग हत्याकांड भी बोला जाता है। इस जनसभा की मुखबिरी हंसराज नामक भारतीय ने की था और उसके सहयोग से इस हत्याकांड की साजिश रची गयी थी।

- 21 वर्ष बाद ,13 मार्च,1940 को,एक क्रांतिकारी भारतीय ऊधम सिंह ने माइकल ओ डायर की गोली मारकर हत्या कर दी क्योंकि जलियांवाला हत्याकांड की घटना के समय वही पंजाब का लेफ्टिनेंट गवर्नर था।

जलियांवाला बाग हत्याकांड में कितने लोग मारे गए?

- जलियांवाला बाग हत्याकांड के दौरान हुई मौतों की संख्या पर कोई आधिकारिक डेटा नहीं था। लेकिन अमृतसर के डिप्टी कमिश्नर कार्यालय में 484 शहीदों की सूची है, जबकि जलियांवाला बाग में कुल 388 शहीदों की सूची है।
- ब्रिटिश राज के अभिलेख इस घटना में 200 लोगों के घायल होने और 379 लोगों के शहीद होने की बात स्वीकार करते हैं जिनमें से 337 पुरुष, 41 नाबालिग लड़के और एक 6-सप्ताह का बच्चा था।
- अनाधिकारिक आँकड़ों के अनुसार 1000 से अधिक लोग मारे गए और 2000 से अधिक घायल हुए।

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   1. जलियांवाला बाग हत्याकांड के दौरान लॉर्ड मिण्टो वायसराय था।
   2. जलियांवाला बाग हत्याकांड के विरोध में रवीन्द्रनाथ टैगोर ने नाइटहुड की उपाधि लौटा दी थी।

   उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?
   (a) केवल 1
   (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों
   (d) न तो 1, न ही 2

1. Consider the following statements-

1. Lord Minto was the viceroy during Jallianwala Bagh Massacre.
2. Ravindra Nath Tagore returned his Knighthood in retaliation to Jallianwala Bagh massacre.

Which of the above statements is/are correct?
(a) Only 1
(b) Only 2
(c) Both 1 and 2
(d) Neither 1 nor 2

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्रश्नः- जलियांवाला बाग नरसंहार के कारणों को स्पष्ट करते हुए इस पर प्रकाश डालिए।

(250 शब्द)

Q. Elucidate the reasons of Jallianwala Bagh massacre. Explain.

(250 Words)

नोट : 11 अप्रैल को दिए गए प्रारंभिक परीक्षा (संभावित प्रश्न) का उत्तर 1(c) होगा।